मिट्टी की मूर्तियां और दुखों को हरने वाले सब के प्रिय श्री गणेश जी

एक जानकारी के मुताबिक माटी गणेश-सिद्ध गणेश मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा पर्यावरण के पक्ष में की गई पुनीत पहल प्रशंसनीय है . उल्लेखनीय है कि माननीय मप्र मुख्यमंत्री जी ने यह कहा कि भगवान गणेश की तरह नवरात्र में मां दुर्गा की मूर्तियां भी मिट्टी से निर्मित हो. मिट्टी की मूर्ति पर्यावरण के अनुकूल होती है . बहुत कम पैसो में तैयार हो जाती है . मिट्टी से निर्माणाधीन मूर्तियों में तुरंत बदलाव भी संभव कर सकते है . ये धार्मिक कार्य में पवित्र भी मानी जाती है. मिट्टी की मूर्तियां भी मूर्तिकला में अपना एक अलग स्थान

रखती है . मूर्तियां सदियों से कलात्मक अभिव्यक्ति का एक अभिन्न अंग रही है. अभियान में पर्यावरण संस्थान नर्मदा समग्र द्वारा प्रशिक्षण के माध्यम से विकासखंड में परिषद से जुड़ी नवांकुर सखियों को प्रशिक्षित किया जारहा है . इससे मिट्टी की मूर्ति बनाने की प्रक्रिया में प्रतिबद्धता,ज्ञान और अनुभव मूर्तिकार को प्राप्त होगा. जिससे वे अपने ग्रामों में स्थानीय महिलाओं को प्रेरित प्रशिक्षित कर अभियान के लक्ष्य को पूर्ण करने में अपनी कला की सहभागिता पर्यावरण के पक्ष में सहायक होगी. ताकि गुणवत्तापूर्ण कलाकृतियां का लाभ प्राप्त हो सकें .

इंदौर से मनावर की दूरी 125 किमी है।तहसील मनावर के समीप 2 किमी की दूरी पर काली किराय है।जहाँ पर मानता गणेश मंदिर निर्मित है।भगवान गणेशजी की मूर्ति 2. 5 वर्ष पूर्व कालू जी देववंशीय मालवीय लोहार को मान नदी में मिली थी।जिसे उन्होंने देवली बनाकर स्थापित की।वर्तमान में मंदिर समिति द्वारा भव्य मंदिर, सुंदर बगीचा,एवं हनुमानजी,शिवजी की मूर्ति स्थापित की।शिव की मूर्ति मान नदी जो मंदिर के ठीक तकरीबन 100 फिट नीचे प्रवाहमान है।वहाँ चट्टानों के नीचे स्थापित है।चट्टानों से शिव के ऊपर प्राकृतिक रूप से जल अभिषेक होता रहता है। मानता गणेश में जो मानता मानी जाती वो अवश्य पूरी होती है।शिव भक्ति का प्राकृतिक, सुंदर स्थल में ? शिवाय नमस्तुभ्यं के मंत्र के साथ भक्त भजन,पूजन कर मनोकामना को पूर्ण करते है।दीपावली के दिन लक्ष्मी ,गणेश के साथ कुबेर की भी पूजा की जाती है।विघ्न विनाशक ,मंगलकर्ता ,ऐश्वर्य ,भौतिक सुखों ,धन -धान्य ,शांति प्रदान करने के साथ साथ विपत्तियों को हरने वाले लक्ष्मी ,गणेश ,कुबेर का महापूजन अति फलदायी होता है।भगवान गणेश के बारे में विभिन्न ग्रंथों में उनकी महत्ता का वर्णन मिलता है . भगवान गणेश देवो के देव महादेव शिव के पुत्र हैं। भगवान गणेश की पत्नी का नाम रिद्धि और सिद्धि है। रिद्धि और सिद्धि भगवान विश्वकर्मा की पुत्रियां हैं। भगवान विश्वकर्मा *वास्तु ग्रंथो के रचनाकार है ! भगवान विश्वकर्मा को निर्माण के भी देवता माने जाते हैं ! *निर्माण के देवता भगवान विश्वकर्मा भगवान गणेश के ससुर हैं ! इसलिए भी गणेश जी का वास्तु शास्त्र के निराकरण में प्रमुख भूमिका है !भगवान गणेश नई शुरुआत, समृद्धि, बुद्धि और सफलता के देवता और जीवन से बाधाओं को दूर करने वाले भगवान !भगवान गणेश के अन्य नामगणपति, विनायक, गजानन, गणेश्वर, गौरी नंदन, गौरी पुत्र, श्री गणेश, गणाधिपति, सिद्धिविनायक, अष्टविनायक, बुद्धिपति, शुभकर्ता, सुखकर्ता है . निवास स्थान-गणेश लोक है अस्त्र त्रिशूल, तलवार, अंकुश, पाश, मोदक और परसु है . प्रतीक स्वास्तिक और मोदक है दिवस बुधवार,जीवनसाथी सिद्धि और रिद्धि है . माता-पिता भगवान शिव देवी पार्वती भाई-बहन भगवान कार्तिकेय (बड़े भाई) , भगवान अयप्पा (बड़े भाई) , देवी अशोकसुन्दरी (बड़ी बहन) , देवी ज्योति (बड़ी बहन) और मनसा देवी (बड़ी बहन)संतान शुभ (बड़ा बेटा . शुभता का प्रतीक.), लाभ (छोटा बेटा . लाभ का प्रतीक.), और मां संतोषी (बेटी . संतुष्टि की देवी.),सवारी चूहा (मूषक)शास्त्र गणेश पुराण, शिव महापुराण और मुद्गल पुराण. हर गांव शहर में गणेश जी का मंदिर होता ही है कई मंदिरों का प्राचीन ग्रंथो में भी उल्लेख है जैसे चिंतामन गणेश उज्जैन आदि गणपति बप्पा मोरिया आते ही बच्चों में गणेश जी की मूर्ति एवं झांकी सजाने का उत्साह होता है . हर कार्य में गणेश जी को ही सर्वप्रथम प्राथमिकता दी जाती है .

संजय वर्मा दृष्टि
125 बलिदानी भगतसिंह मार्ग
मनावर जिला धार मप्र

ज़िंदगी का सफ़र

लघुकथा

चाय का प्याला हाथ में लिए सोनू खिड़की से झमाझम बरसती बारिश को निहार रही थी। हाथ में पकड़ी किताब कभी उसकी कहानी में डूब जाती, तो कभी बारिश की बूंदों को निहारती।

सड़क पर लोग भागते-दौड़ते बारिश से बचते निकल रहे थे। तभी उसकी नज़र एक बुजुर्ग पर पड़ी—वे पेड़ के नीचे भीगने से बचने की कोशिश में कबसे खड़े थे, पर तेज़ ठंड में कांप रहे थे।

सोनू को यह दृश्य देखकर लगा जैसे उन्हें सचमुच मदद की ज़रूरत है। उसने किताब टेबल पर रखी, एक छाता ढूंढा और बाहर निकल गई। पास जाकर बोली बाबा, ये छाता ले लो और घर जाइए। बारिश थमने का तो कोई आसार नहीं है।

उसने अपना छाता उन्हें पकड़ा दिया और साथ लाए कुछ बिस्किट के पैकेट भी थमा दिए। बातचीत के दौरान मालूम हुआ कि वे एक वृद्धाश्रम में रहते हैं। सोनू ने सोचा, कहीं आगे भी उन्हें मदद की ज़रूरत पड़े, इसलिए अपना पता और फ़ोन नंबर भी दे दिया।

फिर वह वापस घर लौटी, टेबल से किताब उठाई और मुस्कुराते हुए दोबारा पढ़ने लगी...

ज़िंदगी का सफ़र।
सुरेखा सरोदे
इंदौर

लोकलाज

शिल्पा ने अपने घर के काम के लिए काम करने वाली बाई लक्ष्मी को मासिक वेतन पर रखा हुआ था। वह लक्ष्मी से बर्तन, झाड़ू, पोंछा आदि काम कराती थी और बदले में मासिक रूपये एक हजार देती थी। लक्ष्मी को हर महीने की पांच तारीख तक उसकी पगार दे दी जाती थी। लक्ष्मी को काम करते हुए महीना भर भी नहीं हुआ था कि लक्ष्मी शिल्पा से बीच बीच में रूपये मांगने लगी थी। इस तरह वह हर महीने कुछ न कुछ रूपये मांग लिया करती थी। कभी बच्चों की फीस भरने के लिए तो कभी घर में किसी के बीमार हो जाने से दवाई आदि के लिए। शिल्पा रूपये देने में कभी इंकार भी नहीं करती थी। वह इस तरह के ग़रीब लोगों की मजबूरी खूब अच्छी तरह से समझती थी।उसके मायके में भी इसी तरह की मांग काम वाली बाई भी किया करती थी और अक्सर किसी जरूरत के लिए रूपये ले लेती थी।

एक दिन लक्ष्मी ने एक जरूरी काम बता कर शिल्पा से कहा - मेडम, आज मुझे एक जरूरी काम से कहीं जाना है इसलिए आज मैं काम पर नहीं आ सकूंगी।

लक्ष्मी इसके पहले भी ऐसा कई कई बार कर चुकी थी और शिल्पा उसे इसकी अनुमति दे दिया करती थी।

लेकिन जब लक्ष्मी ने फिर से छुट्टी की बात कही तो उसे थोड़ी झुंझलाहट हुई। वह सोच में पड़ गयी कि हमेशा की तरह आज भी लक्ष्मी कोई जरूरी काम का बहाना बना रही छुट्टी ले रही है। लेकिन वह कर भी क्या सकती थी। अतः शिल्पा ने न चाहते हुए भी उसे छुट्टी दे दी। लक्ष्मी खुश हो कर चली गयी।

आज शाम को शिल्पा को एक जरूरी वैवाहिक वर्षगांठ के कार्यक्रम में आवश्यक रूप से जाना था और घर का काम अभी वैसा ही पड़ा था। शिल्पा ने झुंझला कर मन ही मन में कहा जिस दिन घर में काम अधिक होता है उसी दिन यह लक्ष्मी छुट्टी ले लेती है। लक्ष्मी के छुट्टी ले लेने से घर का आवश्यक काम उसीको मजबूरी में करना पड़ता है। आज भी उसे ही घर का काम करना पड़ेगा। शिल्पा बड़बड़ा कर घर का काम करने लगी।

शिल्पा जब भी अपने घर का काम खुद करती तब उनका पुत्र विकास उन्हें टोक कर कह देता - मम्मी,आप भी कमाल की हो, ये बाईयां अकसर ऐसे ही छुट्टी मनाती है और काम से बच जाती है।तुम हो कि उनकी अधिक छुट्टी के पैसे भी नहीं काटती।जबकि दूसरे घरों में तो ज्यादा छुट्टी लेने वाली बाईयों के पगार में से पैसे काट लिए जाते हैं।

बेटा, सबकी अपनी अपनी मजबूरी होती है, कोई जानबूझ कर छुट्टी क्यों मनाएंगी।

नहीं मम्मी ऐसी बात नहीं है, जिस दिन बाई छुट्टी लेती है यदि उसी दिन उसके घर जाकर देखो तो वह आराम करती हुई मिलेगी।यदि तुम्हें इस बात का भरोसा नहीं हो तो किसी दिन ऐसा करके देख लेना,सचाई सामने आ जाएगी। जब विकास ने अपनी यह बात जोर देकर कही तो शिल्पा सोच में पड़ गयी।

खैर,आज जैसे तैसे शिल्पा ने आवश्यक

बर्तन आदि की स्वयं ने सफाई कर ली और झाड़ू भी लगाई।आज उसे शाम को कार्यक्रम में जाने से पहले बाजार जाना भी जरूरी था। बाजार से एक गिफ्ट भी लेना था ताकि शाम को वह अपने पारिवारिक मित्र को गिफ्ट भेंट कर सकें।

शिल्पा के पति अमरचंद एक बड़े आफिसर थे। वेअपने आफिस में काम करते थे , उनका आफिस दस किलोमीटर दूर था, इसलिए वे घर से टिफिन लेकर जाते थे और लंच के समय लंच ले लेते थे। अपने काम के सिलसिले में वे बाहर दौरे पर भी जाते रहते थे। उन्हें अपने घर के काम काज से कोई मतलब नहीं था। वे सुबह उठते , नहाते धोते और तैयार हो कर डाइनिंग टेबल पर आ जाते। जहां शिल्पा उनका नाश्ता तैयार रखती,जिसे खा पी कर वे अपनी कार से आफिस चले जाते और साथ में अपना टिफिन भी ले जाते।

उनका इकलौता बेटा विकास एक कंपनी में सेल्स मैनेजर था और उसका भी काम आफिस और टूर पर जाने का रहता था। शिल्पा ने इसीलिए काम वाली बाई को रखा था ताकि वह घर की साफ सफाई और बर्तन आदि करले और वह अपने पति व बेटे के लिए अच्छा खाना बना सकें।पहले उसकी इच्छा थी कि वह घर का खाना भी बाई से बनवा लिया करें,भले ही बाई को कुछ अधिक रूपये देना पड़े। लेकिन आजकल बाईयों के इतने नाज नखरे होते हैं कि बस कुछ न पूछो। एक बार शिल्पा ने एक बाई को खाना बनाने और घर का काम करने के लिए रखा था। वह बाई घर का काम तो ठीक करती थी, लेकिन भोजन ठीक से नहीं बनाती थी। न तो उसे अच्छा नाश्ता बनाना आता था और न अच्छा खाना बनाना। इस बात को लेकर शिल्पा ने उस बाई को दो चार बार कहा भी लेकिन उस बाई ने ध्यान नहीं दिया। एक दिन जब शिल्पा ने उसे कुछ जोर से कह दिया तो वह नाराज़ हो गयी और अपने पैसे का हिसाब मांग बैठी और फिर कभी काम पर न आने का कह कर चली गयी।उसके बाद से शिल्पा ने खाने का काम अपने ऊपर ले लिया और बाकी काम के लिए लक्ष्मी को रख लिया। लक्ष्मी को घर का काम सिपुर्द करने से शिल्पा को थोड़ा आराम मिल गया।

अब कोई दिक्कत नहीं थी। शिल्पा के हाथ का खाना सभी को पसंद था। नाश्ता और भोजन यही दो काम थे शिल्पा के जिम्मे।बाकी काम लक्ष्मी कर ही रही थी। सबको समय पर नाश्ता और भोजन तैयार मिलता।समय पर टिफिन भी तैयार हो जाता था। पति और पुत्र दोनों इस व्यवस्था से खुश थे।कुछ दिन बाद ही से लक्ष्मी अपनी मासिक पगार से कुछ रूपये एडवांस के रूप में मांगने लगी थी तो शिल्पा को थोड़ा आश्चर्य हुआ था,परंतु अब वह इसकी अभ्यस्त हो गयी थी। अतः कुछ नहीं बोलती थी और चुपचाप पैसे दे देती। धीरे धीर यह क्रम चल रहा था, लेकिन फिर यह क्रम कुछ अधिक ही होने लगा तो शिल्पा ने लक्ष्मी से पूछ ही लिया - तुम्हें आजकल कुछ ज्यादा ही रूपयों की जरूरत पड़ने लगी है, क्या बात है लक्ष्मी ? लक्ष्मी बोली - मेडम, बात यह है कि मेरी बेटी की डिलेवरी होने वाली है, इसलिए मुझे जब तब रूपयों की जरूरत पड़ती रहती है।

ओह,तो यह बात है। ठीक है मैं रूपये दे देती हूं,तुम अपनी बेटी का ध्यान रखना। शिल्पा ने सहज सहानुभूति से कह कर रूपये दे दिये।

इस तरह से लक्ष्मी कभी बेटी के लिए तो कभी बेटे के तो कभी पति के बीमार होने और दवाई आदि के लिए पैसे मांगने लगी थी।इससे शिल्पा को लगा कि कहीं लक्ष्मी जानबूझ कर उससे रूपये लेती रहती है। हालांकि वह ये रूपये अपनी पगार में से ही लेती थी, इसलिए शिल्पा को कोई अनुचित बात भी नहीं लगती थी।लेकिन शिल्पा कभी कभी उसकी पगार के अलावा भी रूपयों की मदद कर देती थी।इस बात का एहसास लक्ष्मी को भी था इसलिए वह अतिरिक्त काम में भी जुट जाती थी। शिल्पा के मन में कभी कभी संदेह हो जाता था कि इतनी पगार और मेरी मदद देने के बाद भी लक्ष्मी को इतने अधिक रूपयों की जरूरत क्यों पड़ती हैं। जब उसने एक दिन लक्ष्मी से पूछ लिया तो लक्ष्मी सुबकने लग गयी।यह देख कर शिल्पा को दुख हुआ कि उसे लक्ष्मी से इस तरह की बात नहीं पूछनी चाहिए थी। लक्ष्मी ने अपने आंसू साड़ी के पल्लू से पोंछते हुए कहा - मेडम, मेरे पति को एक गंभीर बीमारी हो गयी है, इसलिए मुझे रूपयों की जरूरत पड़ती है। क्या बीमारी है ? शिल्पा ने पूछा। कैंसर हो गया है मेडम..। लक्ष्मी ने कहा तो शिल्पा यह सुन कर दंग रह गयी।वह समझ गयी कि लक्ष्मी वास्तव में एक दुखियारी स्त्री है।बेचारी अकेली घर भी चला रही है और बेटे - बेटी के लिए भी खट रही है। लेकिन वह भी क्या कर सकती है। इस संसार में सभी लोग दुखी हैं। इसमें कोई क्या कर सकता है ? जिससे जितनी मदद हो जाए कर देनी चाहिए।सबका दुख तो बांटा नहीं जा सकता। इस तरह की बातें शिल्पा सोचा करती थी।वह उच्च शिक्षित महिला थी, वह नौकरी करना चाहती थी, लेकिन उनके पति अमरचंद ने नौकरी करने से साफ मना कर दिया था। अतः वे घर ही रह कर बागवानी तथा सोशल वर्क करती रहती थी। वे कई सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़ी हुई थी।उनमें मानवीय मूल्यों की समझ थी और वे हर किसी की मदद करना अपना कर्तव्य समझती थी। अपनी घरेलू मेड लक्ष्मी के प्रति भी वे उदार और मददगार थी।

आज जब शाम को शिल्पा अपने पारिवारिक मित्र तथा एक संस्था के प्रमुख अधिकारी के वैवाहिक वर्षगांठ कार्यक्रम में पहुंची तो वहां सबसे मिली और जिनकी वैवाहिक वर्षगांठ थी उनके पास जाकर हैप्पी एनिवर्सरी कह कर उन्हें बधाई दी और गिफ्ट दिया। फिर वे वहीं पर खड़ी हो गयी और उन्होंने फोटो खिंचवाया।इसके बाद वे भोजन के लिए जैसे ही स्टाल पर आई तो वहीं पर लक्ष्मी को झूठी प्लेट और बर्तन उठाते और साफ करते देखा तो चकित रह गयी। वे मन ही मन बुदबुदाने लगी और वहां से हट गयी। फिर मेहमानों के बीच कुर्सी पर जा कर बैठ गयी।? वे अपने मन की आंखों से लक्ष्मी का दुख देख कर समझ चुकी थी। बेचारी लक्ष्मी,कितनी जगह काम करती है फिर भी उसके जीवन में आराम नहीं है।आज भी वह छुट्टी के बहाने से यहां आकर काम कर रही है। शायद उसे अपने बीमार पति के लिए ही यह सब करना पड़ रहा है।जब लक्ष्मी झूठी प्लेट और बर्तन उठा रही थी तब उसने भी शिल्पा मेडम को देख लिया था और शिल्पा तो उसे पहले ही देख ही देख चुकी थी।पल भर के लिए लक्ष्मी को ऐसा लगा जैसे वह चोरी करती हुई पकड़ी गयी है। वह घबरा कर दूसरी वह ओर चली गयी और काम करने लगी।वह सोचने लगी कि कल जब मेडम के घर जाऊंगी तो मेडम सचमुच उसे बहुत डाटेंगी और दस बातें सुनाएंगी कि मुझसे छूट्टी मांग कर गयी और यहां काम कर रही है।

मेडम शिल्पा जब कार्यक्रम से निवृत्त हो कर अपने घर चली गयी तो लक्ष्मी ने राहत की सांस ली।अगले दिन वह जब मेडम के घर काम करने गयी तो मेडम ने उसे कुछ नहीं कहा।यह देख कर उसे आश्चर्य हुआ, लेकिन उसने अपनी ओर से कोई सफाई नहीं दी।जब वह काम करके घर जाने लगी तब शिल्पा ने कहा - लक्ष्मी कल तुम्हें वहां काम करते देख कर मैं समझ गयी कि शायद तुम्हें पैसों की सख्त जरूरत थी, इसलिए तुम मुझसे छुट्टी का बहाना बना कर वहां काम करने चली गयी थी , लेकिन कोई बात नहीं। यदि तुम्हें वास्तव में पैसों की जरूरत थी तो मुझे बोलती, मैं दे देती, तुम्हें झूठ बोल कर छुट्टी लेने की क्या जरूरत थी ?

यह सुन कर लक्ष्मी रो पड़ी और बोली - मेडम, आप तो हर बार मेरी मदद करती ही रही है। मैंने आपसे कितनी ही बार पैसे लेकर घर चलाया,लेकिन आपने कभी कुछ न कहा और तो और आपने उधार दिए रूपयों की कभी मांग भी नहीं की।मैं बड़ी शर्मिंदा हूं।बार बार पैसे मांग कर मैं काफी शर्मिंदा हो चुकी हूं। लेकिन अब कुछ न मांगूंगी..।

क्यों, ऐसी क्या बात हो गयी है ? शिल्पा ने चकित होकर पूछा।

इसलिए कि मेरा पति अब इस दुनिया में नहीं है,वह मर चुका है। मेडम, अब मैं कुछ दिनों तक काम पर नहीं आ सकूंगी,यही कहने के लिए मैं आई थी।

यह सुन कर शिल्पा हतप्रभ रह गयी।

डॉरमेशचंद्र
इंदौर -मो0 नं0 8319782218

कुत्तों की जय ! लुच्चों की जय !

आजकल पता नहीं क्या हो गया है कि मनुष्यों से अधिक कुत्ते मेरी ओर आकर्षित हो रहे हैं। मेरी ओर कुत्तों का बढ़ता रूझान देख मेरे मोहल्ले के कुछ आदमी लवरों का कहना है कि मैं कुत्ता लवर हो गया हूं। मेरे मन में बीवी को छोड़ कुत्तों के प्रति प्रेम उमड़ रहा है। अब क्या करूं भाई साहब! मैं हूं ही इतना हैंडसम कि ....मेरे मोहल्ले के कुछ कुत्ता विशेषज्ञों का कहना है कि कुत्ता लवरों से कुत्तों को दूर से ही उसी तरह एक खास किस्म की गंध आती है जिस तरह की गंध दूर से साहब से साहब लवरों को आती है। और वे दूर से ही उस आती गंध से पहचान लेते हैं कि उनका लवर आ रहा है। तब वे बिना एक पल खोए अपने नथुने फुला उसके स्वागत के लिए तैयार हो जाते हैं।

अपने मोहल्ले मे सारा दिन कभी मोहल्ले के इस घर के आगे तो कभी उस घर के आगे पसरा रहने वाला पिचका पेट आवारा कुत्ता कई दिनों से परेशान लग रहा था। परेशान की पीड़ा परेशान जाने और न जाने कोय की तर्ज पर कल मैंने समय और फुर्सत दोनों होते उससे पूछ ही लिया,' क्यों भाई जान! देख रहा हूं तुम कई दिनों से परेशान से लग रहे हो? परेशानी आवारों को शोभा नहीं देती। आवारा चाहे कुत्ते हो या फिर मनुष्य, दोनों परेशानियों से मुक्त होते हैं।

डियर! परेशानी तो मनुष्य का गहना है। समझदार से समझदार मनुष्य ने कुछ और पहना हो या न, पर परेशानी का गहना जरूर पहना है। मनुष्य को भरपेट रोटी मिले तो परेशान! न मिले तो परेशान!

मनुष्य को नौकरी मिले तो परेशान! न मिले तो परेशान! मनुष्य को मनुष्य मिले तो परेशान! न मिले तो परेशान! मनुष्य का विवाह हो तो परेशान! न हो तो परेशान! मनुष्य को आराम करने को समय मिले तो परेशान! न मिले तो परेशान! मनुष्य को सुख मिले तो परेशान! न मिले तो परेशान! मनुष्य को चैन मिले तो परेशान! न मिले तो परेशान!'

'मतलब?' उसने वैसे ही अस्त व्यस्त लेटे लेटे अपने मोबाइल की यूट्यूब पर हनुमान चालीसा लगाए पूछा तो मैंने उससे कहा,' मतलब ये कि मनुष्य गलती का नहीं, परेशानी का पुतला है। गए वे दिन जब मनुष्य गलती का पुतला हुआ करता था। अब तो गलत से गलत मनुष्य एक तो अपनी गलती नहीं मानता, अगर मान लेता है तो उसके बाद अपनी गलती को तर्कों की ऐसी ढाल देता है...ऐसी ढाल देता है कि ....

मनुष्य ईमानदारी के बिना मजे से रह सकता है , पर परेशानी के बिना एक पल भी नहीं रह सकता।

मनुष्य सच के बिना मजे से रह सकता है, पर परेशानी के बिना एक पल भी नहीं रह सकता।

मनुष्य प्रेम के बिना मजे से रह सकता है, पर परेशानी के बिना एक पल भी नहीं रह सकता।

मनुष्य मनुष्य के बिना मजे से रह सकता है, पर परेशानी के बिना एक पल भी नहीं रह सकता। अब

मनुष्य तो डियर तुम हो नहीं, फिर मनुष्य की तरह परेशान क्यों?' मैंने कुत्ते से पूछा तो उसका रोना निकल आया, झुट्ठी मुट्ठी का नहीं, सच्ची मुच्ची का।

वह रोने लगा तो कुत्ता लवर होने के नाते मैं भी उसके साथ रोने लगा। जब उसने मेरे आंसू पोंछे और मैंने उसके, तब जाकर हम दोनों कुछ नार्मल हुए। फाइनली वह मेरी आंखों के आंसू पोंछते पोंछते बोला, ' क्या बताऊं लवर! कई दिनों से बहुत कशमकश में चल रहा हूं। मोहल्ले वालों की बासी रोटी तक खाने को मन नहीं कर रहा। पता ही नहीं चल रहा कि आखिर ये सब हो क्या रहा है? कानून कभी मेरे बारे में ये कह रहा है कभी वह। पहले कहा हमें शेल्टर होम में रखा जाएगा। घुमक्कड़ होने के बाद भी मैं खुश हो गया! चलो, आवारा को भरपेट रोटी मिलेगी या नहीं, पर सिर ढकने को शेल्टर तो मिलेगा। हमारे वेज में से वे मटन शटन खाएं तो खाते रहें। यही इस देश की रीत है।

फिर आदेश हुआ कि हमें रेबीज का टीका लगाया जाएगा। फिर सोचा! आखिर रहना तो अपने से भी जहरीले मनुष्यों के बीच है। लगवा लेंगे। तुम्हारी सेफ्टी के लिए नहीं तो अपनी सेफ्टी के लिए ही सही। फिर मुश्किल। फिर तय हुआ कि राष्ट्रीय स्तर पर हमारे लिए माइक्रोचिपिंग व्यवस्था होगी। फिर हमारी नसबंदी करके जिस गली, मोहल्ले, शहर में रहते हैं, वहीं छोड़ दिया जाएगा।

अच्छा डियर! एक बात बताओ? साल पहले जो हमारे शहर में प्रशासन ने हमारी नसंबदी करने की जो मशीन खरीदी थी उससे किसकी नसबंदी हुई? सुबह से शाम तक हर घर के द्वार पर बासी टुकड़ों का गालियां सुनते हुए इंतजार करने वाले किसीको क्या काटेंगे? डियर! मनुष्य हो या कुत्ता! व्यवस्था में जब किसीको भरपेट खाना नहीं मिलेगा तो वह काटेगा नहीं तो क्या पुचकारेगा? उन्हें भी तो अपने पेट भूख शांत करनी होती है। पेट केवल पूंजीपतियों के ही नहीं, सबके लगा होता है न माई डियर लवर!

आजकल अपने पेट से अधिक अपने बारे में किस्से कहानियों से अखबारों के पेज भरे देख मन बहुत आहत है डियर! हाय! आवारा कुत्ते तेरी यही कहानी! कभी शेल्टर होम, कभी नसंबदी, कभी मोइक्रोचिपिंग, कभी बजट बिरयानी, ' आवारा कुत्ते ने अपने लवर मतलब मुझसे शायराना अंदाज में सिसकते हुए कहा तो मैंने जितना मुझे अपने अनुभव के आधर पर पता था उतना उससे कहा,' देखो दोस्त! यहां जिसका कोई नहीं होता उसका खुदा भी नहीं होता। खुदा भी उसीका साथ देता है जिसके सिर पर किसीका हाथ होता है।'

'मतलब?'

' सियारों, गिद्धों, गिरगिटों, उल्लुओं, गीदड़ों के केस देख लो!' अब मैं उसे किसी पार्टी की मेंबरशिप का फार्म लाकर तो दे नहीं सकता न! सुना है, आवारा को इशारा ही काफी होता है।

.... कि अचानक उसके मोबाइल पर किसीकी कॉल आई तो उसने अपना मोबाइल अपने कान से लगाते कहा, ' जी जनाब! क्या जनाब? मतलब हम जीत गए? पंद्रह दिनों में ही हमें इंसाफ मिल गया? बहुत बहुत थैंक्स जनाब! काटे सो आबाद! कुत्ता एकता जिंदाबाद! कुत्ता एकता जिंदाबाद! कुत्ते शक्ति कलियुगे! लुच्चे शक्ति कलियुगे!'

भूखे पेट होने के बावजूद भी उसने भरे पेट वालों सी भी जोर के नारे लगाए और पांच पांच छलांगों की एक छलांग भरता ये गया कि वो गया।

एक सच कहूं, मेरे शहर में एक संभ्रांत दिन दहाड़े सरकारी पानी की चोरी करते पकड़े गए तो उन्होंने तत्काल पावरफुल पार्टी का हाथ अपने सिर पर रखवा लिया। अब उन्हें कोई नहीं पूछता। अब अगर उनकी चोरी के पानी से भरी गाड़ी कहीं चढ़ न पाए तो अफसर लोग पसीना पसीना होते उनकी गाड़ी को धक्का लगा गंतव्य तक पहुंचा धन्य हो जाते हैं। दबी जुबान में कहूं तो आज का जमाना कुत्तों और लुच्चों का जमाना है। इंसानों को यहां पूछता ही कौन है? इंसानों कों लेकर यहां हर कानून मौन है, हर संसद मौन है।

अशोक गौतम
गौतम निवास, अप्पर सेरी रोड़,
नजदीक मेन वाटर टैंक,
सोलन-173212 हि.प्र.